प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र की संरचना तथा कार्यप्रणाली पर
एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

पन्तनगर। 12 फरवरी 2023। विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी सेंटर (नाहेप सभागार) में शोध निदेशालय की ओर से 'विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र : संरचना तथा कार्यप्रणाली' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विगत दिवस में आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय विश्व खाद्य सुरक्षा सम्मेलन' के दौरान अतिथियों के व्याख्यानोंपरान्त विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए किया गया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा. तेज प्रताप, पूर्व कुलपति, पन्तनगर विश्वविद्यालय द्वारा विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र के लिए विजन, मिशन व मैन्डेट के निर्धारण हेतु उपस्थित सभी विशिष्ट वैज्ञानिकों से गहन विचार–विमर्श कर इसकी रूप–रेखा तय की गयी। उनके द्वारा प्रथम मिशन का लक्ष्य 2030 तक रखने की अनुशंसा की गयी जिसमें केन्द्र को स्थापित करने तथा संबंधित विषयों एवं संरचनाओं हेतु एक प्लेटफार्म का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भागीदारी के साथ निर्धारण करने का सुझाव दिया गया। सभी उपस्थित वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श के उपरांत उनके द्वारा विजन के रूप में संस्था की जिम्मेदारियों को खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों के संदर्भ में सशक्त करना तथा मिशन के रूप में चार मुख्य क्षेत्रों यथा वातावरण जनित समस्याएं, सामाजिक मुद्दों, तकनीकी नवाचार तथा मानव संसाधन (नयी पीढ़ी के वैज्ञानिकों के संदर्भ में) को तय किया गया। इसके साथ ही अन्य बिन्दुओं जैसे केन्द्र की स्थापना, क्रियान्वयन, शोध क्षेत्र, समन्वयन, सम्भावनाएं, अंतर्विषयक अध्ययनों आदि परिमापों पर निर्णय लेने पर भी विचार–विमर्श हुआ।

इस अवसर पर फ्रांस के विजिटिंग प्रोफेसर डा. सर्ज सावरी ने पन्तनगर विश्वविद्यालय में विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र की स्थापना हेतु पैनल को प्रस्तावित लक्ष्यों के बारे में बताया। उन्होंने पन्तनगर विश्वविद्यालय में इस केन्द्र को स्थापित करने की सिफारिश की क्योंकि पन्तनगर विश्वविद्यालय में बहु–विषयक शिक्षा प्रणाली है तथा खाद्य सुरक्षा से सम्बन्धित समस्त विषयों पर वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ उपलब्ध है जिनसे विषय आधारित शोध का क्रियान्वयन सुचारू रूप से हो सकेगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मननोहन सिंह चौहान ने कहा कि देश में कश्मीर से कन्याकुमारी तक खाद्य गुणवत्ता में विविधताएं है। विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र की स्थापना में सामाजिक, पर्यावरण तथा तकनीकी विकास की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत के विकसित होने में कृषि तथा इसरो ने प्रमुख योगदान किया है। केन्द्र मुख्य रूप से खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में वातावरण की चुनौतियों के मध्य शोध एवं विकास तथा नए ज्ञान एवं तकनीकी को विकासित करने एवं हितधारकों के मध्य पहुंचाने में अहम भूमिका निभा सकता है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि मानव संसाधन की क्षमता और वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता केन्द्र की सफलता में मुख्य भूमिका निभाएगी।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत करते हुए डा. अजीत सिंह नैन, निदेशक शोध ने विश्व खाद्य सुरक्षा केन्द्र की प्रासंगिकता तथा आवश्यकता के बारे में बताया तथा अंत में इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रभावी योगदान के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यशाला में डा. धीर सिंह, निदेशक एवं कुलपति, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल; डा. पॉल डी. इस्कर, पेनसेल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए; डा. लितिसिया विलोकेट, इनरा, फ्रांस; डा. अजय कोहली, उपमहानिदेशक शोध, अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुंसधान संस्थान, फिलीपिंस; डा. एम. मधु, निदेशक, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून एवं अन्य वैज्ञानिक उपस्थित थे।

कार्यशाला में मंचासीन कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान, पूर्व कुलपति पंतनगर विश्वविद्यालय, डा. तेज प्रताप एवं डा. सर्ज सावरी ।